आगम-मंथन प्रतियोगिता-VIII–आचारांगभाष्यम्

उत्तर पुस्तिका

मंथन-I

१.	ब	१२९	११.	अ	२६४	२१.	स	२२८
२.	द	भू. १३	१२.	द	४१७	२२.	द	२७७
३.	अ	८६	१३.	स	२६५	२३.	द	३७६
४.	द	२३७	१४.	द	३३४	२४.	स	४१
५.	अ	भू. १७	१५.	द	२६३	२५.	द	भू. १५
६.	ब	४२१	१६.	ब	४४१	२६.	द	२८२
७.	अ	भू. १९	१७.	स	१९७	२७.	द	३९६
८.	द	२४	१८.	ब	४११	२८.	ब	२१२
९.	अ	२७४	१९.	द	२०	२९.	ब	६८
१०.	अ	७५	२०.	ब	३१	३०.	द	२०८

मंथन-II

१.	सही	२२	१०.	गलत	५६	१९.	सही	१६४
२.	सही	१०	११.	गलत	८६	२०.	सही	२३०
३.	सही	२७३	१२.	सही	१३९	२१.	सही	४०८
४.	गलत	३२	१३.	गलत	१४१	२२.	सही	२९२
५.	गलत	२३	१४.	गलत	२४९	२३.	गलत	१९४
६.	सही	४०	१५.	सही	१५५	२४.	गलत	१८०
७.	सही	४९	१६.	सही	३३५	२५.	सही	२२९
८.	सही	७५	१७.	गलत	३२५			
९.	सही	४२२	१८.	सही	३४२			

मंथन-III

१.	हिंसा	प्रस्तुति ७	१०.	आत्मानुभूति	२५५	१९.	लाघव	३२४
२.	अपरिज्ञा	६	११.	ममत्व	८५	२०.	अनुभव	१०४
३.	अरति	९७	१२.	सार	२३९	२१.	साधु	२१
४.	तत्त्वदर्शी	२७	१३.	बलों	१०१	२२.	त्रैकालिक	१८६
५.	हिंसा	११८	१४.	अल्पमेधा	भू.१४	२३.	अनशन	३९५
६.	अनारंभ	२५१	१५.	रोग	२९७	२४.	चिरन्तन	१८
७.	पुनरेति	१६७	१६.	काममुक्ति	१३१	२५.	निद्रां	४२६
८.	'अनन्य-परम'	भू.२०	१७.	सावधिक	३१९			
९.	प्रणता	४६	१८.	आगम	भू.१३			

मंथन-IV

१.	अचित्त	५१	८.	निग्रह	१८८	१५.	विसर्जन	९२
२.	अधिक	३१७	९.	धर्म	३४४	१६.	अहिंसा	२१७
३.	भिन्न	२२२	१०.	पृष्ठ-मस्तिष्क	९१	१७.	पर्यायार्थिक नय	१०४
४.	अपौष्टिक	२२७	११.	भी	११५	१८.	प्रमत्त	५५
५.	प्रकृति	१२	१२.	आर्य	२१८	१९.	आसक्त	२४३
६.	अशक्य	३२७	१३.	पारगामी	१००	२०.	भोजन	११९
७.	मन्दमति	९८	१४.	क्षीण	३४५			

मंथन-V

१.	१४	भू.१५	६.	७	२५९	११.	५०	भू.१३
२.	५	३१८	७.	२०११	भू. ८	१२.	३	२५३
३.	७	१८१	८.	१०	३१६	१३.	१०	४०
४.	८	१५	९.	१८	२३	१४.	२	२९
५.	११	१९६	१०.	५	३२१	१५.	५०	९१

मंथन-VI

१.	सव्वेसिं	१०८	१०.	सत्य	१६१	१९.	सयोगी	२६८
२.	समता	४६	११.	सजीव	३२	२०.	समं	३२३
३.	सरस	४२१	१२.	सर्प	२९४	२१.	सहिष्णु	१८९
४.	सर्वामगन्धं	१२१	१३.	सहन	१४२	२२.	सर्जन	१९७
५.	सचेतना	४७	१४.	समागम	२१६	२३.	सम्यग्	४०९
६.	सहन	१४३	१५.	सम्मान	१०३	२४.	समतायां	२५६
७.	सर्वथा	२९३	१६.	समत्व	१६२	२५.	समणेत्ति	१४४
८.	समाहिं	४१०	१७.	सहारा	२४२			
९.	सर्वेषां	१०८	१८.	सद्ध्यान	४२८			

मंथन-VII

१.	साक्षात्कार	२४	१०.	श्रामणेर	३६५	१९.	धीर	३२३
२.	ममकार	९०	११.	धीर	११४	२०.	अनगार	६१
३.	तीर्थंकर	२०	१२.	संसार	२४४	२१.	विहार	४३४
४.	निरन्तर	१०६	१३.	महत्तर	४०१	२२.	स्वीकार	३२०
५.	संसार	३२८	१४.	तीर्थंकर	१५३	२३.	अंधकार	३०४
६.	विवर	१३३	१५.	बाहर	१३१	२४.	शरीर	१३७
७.	दुष्कर	४६	१६.	आचार	२०५	२५.	कातर	३३८
८.	अनवसर	१०७	१७.	परिहार	१११			
९.	मार	२४०	१८.	व्यवहार	२८०			

मंथन-VIII

१.	इष्ट	७	१०.	क्रिया	२६	१९.	परिमाण	१६१
२.	भगवान् महावीर	४१८	११.	प्रमाद	१४०	२०.	निर्मोह	८१
३.	यौवन	९४	१२.	तप	४४४	२१.	आत्मज्ञ	२०९
४.	क्रियावाद	१५	१३.	धर्म	४५	२२.	रोग	३०८
५.	आचारांग	८७	१४.	परिग्रह	१०८	२३.	क्रोध	२२३
६.	आत्मा	२८३	१५.	परिनिर्वाण	६९	२४.	पराक्रम	३३९
७.	मूर्च्छा	१२६	१६.	विचार	१५१	२५.	चाणक्य	११३
८.	मोक्ष	३१५	१७.	आकांक्षा	३३०			
९.	काम	१३६	१८.	मोह	२३६			

मंथन-IX

१.	सहसाकरी	९०	६.	नियम	१०७	११.	वर्षज	३०५
२.	दोहद	६७	७.	ग्रामकंटक	४३४	१२.	आगन्तार	४२४
३.	अध्युपपन्न	८०	८.	एकानुपश्यी	१८७	१३.	अनाज्ञा	३३६
४.	प्रहेणक	१२०	९.	अपस्मार	३०२	१४.	छन्द	११४
५.	सर्वसमन्वागत	८१	१०.	आदानीय	१३८	१५.	शारद	२२६

मंथन-X

१.	सत्तू	४४०	१०.	धुत	२९७	१९.	बौद्ध	५२
२.	अग्निकाय	५३	११.	जालीकुमार	भू.१३	२०.	आत्मा	४
३.	संयम	९३	१२.	आत्मवाद	४१८	२१.	सन्निवेश	१२२
४.	धन	१३५	१३.	विषाण	७३	२२.	अहोसिरे	२७३
५.	कलल	३१०	१४.	धर्म	३४१	२३.	समनुज्ञ	३५७
६.	मनुष्य	१८२	१५.	काम	३१४	२४.	वशीकार	२५९
७.	सेवाल	३०१	१६.	प्रेत	३९	२५.	अप्काय	५०
८.	उपशम	३३३	१७.	विषय	१८०			
९.	भरत चक्रवर्ती	९८	१८.	आचार्य अकलंक	भू.१५			

मंथन-XI

१.	मूढ़ता से बचने की तैयारी जीवन के अंतिम क्षण में नहीं होती।	३४७
२.	अहिंसक पुरुष वायुकायिक जीवों की हिंसा से निवृत्त होने में समर्थ हो जाता है।	७४
३.	निर्लेपतावाद का चिन्तन बहुत प्राचीन है।	१५२
४.	परिग्रह महाभय का हेतु है।	२५४
५.	प्राणी के प्राणों का अपहरण करना अदत्त है।	३५९
६.	ज्ञाता-द्रष्टा अमोहावस्था का अनुभव करता है।	२००
७.	जो आगमज्ञ है वह वेदविद् है।	३४०
८.	हर कोई व्यक्ति आख्याता नहीं होता।	२९९
९.	संग्रह की मनोवृत्ति मूलमनोवृत्ति है।	१२०
१०.	संयम के आराधक सभी दिशाओं में हैं।	२३२
११.	विकल्प पदार्थ की अपेक्षा से उत्पन्न होता है।	३२४
१२.	अहिंसा आदि सभी धर्म समता में प्रतिष्ठित हैं।	२५७
१३.	लोक के परिज्ञान से ही हेय और उपादेय की बुद्धि प्रस्फुटित होती है।	१६५
१४.	मुनि के लिए संयम ही आदानीय–ग्राह्य है।	३५
१५.	श्मशान में प्रतिमा को स्वीकार कर साधक भय उत्पन्न करने वाले भयानक रूपों को देखकर डरे नहीं।	३२२
१६.	लज्जावान् पुरुष एकांत में भी अनाचरणीय का आचरण नहीं करता।	२६२
१७.	डरा हुआ व्यक्ति अहिंसा का आचरण नहीं कर सकता।	३६६
१८.	प्राणियों को परिताप देना महान् भय है।	३०८
१९.	मुनि सदा शील की अनुपालना करे।	२५९
२०.	संसारी जीव कर्मों से बंधे हुए होते हैं।	५

मंथन-XII

१. धर्मकथी जैसे सम्पन्न को उपदेश देता है, वैसे ही विपन्न को देता है। जैसे विपन्न को उपदेश देता है, वैसे ही सम्पन्न को देता है। १४९

२. जो एक को जानता है, वह सबको जानता है। जो सबको जानता है, वह एक को जानता है। १९२

३. 'जन्म और मृत्यु के समय जो दुःख होता है उस दुःख से सम्मूढ होने के कारण व्यक्ति को पूर्वजन्म की स्मृति नहीं रहती।' २२

४. 'यदि आहार मिलता ही मिलता है तो बहुत अच्छी बात है। यदि नहीं मिलता है तो भी अच्छी बात है। क्योंकि आहार के न मिलने पर सहज ही तप की वृद्धि होती है और यदि मिलता है तो शरीर-धारण या प्राण-धारण सहज हो जाता है।' १२५

५. जिसे तू हनन योग्य मानता है, वह तू ही है। २८२

६. 'प्रारंभ में काम की उपलब्धि अत्यन्त संतापकारक होती है। उपलब्धि के पश्चात् उनका सेवन अतृप्ति का कारण बनता है और अंत में उनको छोड़ना बहुत कष्टप्रद हो जाता है। ऐसे 'काम' का सेवन कौन विद्वान् व्यक्ति करेगा?' २७५

७. जन्म दुःख है, जरा दुःख है, रोग और मरण दुःख है। ३०६

८. सभी मुनि जिनेश्वर देव की आज्ञा में हैं और वे सब कर्मक्षय के लिए यथाविधि (अपनी-अपनी विधि के अनुसार) संयम का पालन करते हुए विहरण करते हैं—ऐसा वह सम्यग्रूप से जानता है। ३२६

९. 'जिसके संपूर्ण कर्म-समारम्भ कामना और संकल्प से रहित होते हैं, तथा जिसके समस्त कर्म (प्रवृत्ति) ज्ञानरूप अग्नि के द्वारा भस्म हो गए हैं, उसको ज्ञानी लोग पंडित कहते हैं।' ३०

१०. 'सुन कर ही कल्याण जाना जाता है और सुनकर ही पाप जाना जाता है। दोनों को सुनकर जाना जाता है। जो श्रेयस्कर है, उसका तुम आचरण करो।' १८९

११. वे तुम्हारे त्राण या शरण के लिए समर्थ नहीं हैं। तुम भी उनके त्राण या शरण के लिए समर्थ नहीं हो। ९६

१२. अनात्मदर्शी साधक गांव या अरण्य में रहता है। किन्तु आत्मदर्शी साधक शुद्ध आत्मा में ही रहता है, ग्राम या अरण्य में नहीं। ३६३

मंथन-XII

१. 'अन्तरात्मा की संप्रेक्षा मनुष्य जीवन में ही हो सकती है'। ९४

२. शांति और मरण की संप्रेक्षा करने तथा अनित्य शरीर की संप्रेक्षा करने पर अप्रमाद की वृद्धि होती है। ११७

३. लोभ भी चित्त का धर्म या भाव है। १००

४. प्राणियों का दुःख और सुख अपना-अपना होता है। २५०

५. अर्थ का अर्जन और ममत्व की प्रगाढ़ता होने पर भी कोई त्राण या शरण नहीं होता। ९६

६. जब तक बुद्धिगत परिग्रह नहीं छूटता तब तक पदार्थगत परिग्रह परित्यक्त नहीं होता। १४१

७. शैलेशी अवस्था में केवल निर्जरण होता है। २१४

८. मनुष्य अपने प्रमाद से नानारूप योनियों का संधान करता है। १०५

९. ममत्व की ग्रंथि से बंधा हुआ पुरुष अर्थ का अर्जन करता है। ९५

१०. मोह राग-द्वेषात्मक होता है। ११५

११. आर्त्त मनुष्य भी धर्म को स्वीकार नहीं करते और प्रमत्त-विलासी मनुष्य भी। २१५

१२. क्रूरता सामाजिक सम्बन्धों को समस्या-संकुल बनाकर मनुष्य को अपारंगम बना देती है। ११०

१३. करणीय और अकरणीय का अविवेक मोह है। ११६

१४. काम बाधा उपस्थित करने वाले और विघ्नबहुल होते हैं। ३१३

१५. अव्यक्त मनुष्य अहंकारग्रस्त होकर महान् मोह से मूढ हो जाता है। २६६

१६. कुछ पक्षी उदकचर भी होते हैं। ३०५

१७. संवेग से जीव अनुत्तर धर्म श्रद्धा को प्राप्त होता है। १९६

१८. गौरव के परित्याग से ही धर्म का ज्ञान होता है। ३३५

१९. जातिस्मृति से आत्मा और पुद्गल का संबंध-बोध भी होता है। २५

२०. जो सत्य की आज्ञा में उपस्थित है, वह मेधावी मृत्यु को तर जाता है। १८९

मंथन-XII

१. 'अन्तरात्मा की संप्रेक्षा मनुष्य जीवन में ही हो सकती है'। ९४
२. शांति और मरण की संप्रेक्षा करने तथा अनित्य शरीर की संप्रेक्षा करने पर अप्रमाद की वृद्धि होती है। ११७
३. लोभ भी चित्त का धर्म या भाव है। १००
४. प्राणियों का दुःख और सुख अपना-अपना होता है। २५०
५. अर्थ का अर्जन और ममत्व की प्रगाढ़ता होने पर भी कोई त्राण या शरण नहीं होता। ९६
६. जब तक बुद्धिगत परिग्रह नहीं छूटता तब तक पदार्थगत परिग्रह परित्यक्त नहीं होता। १४१
७. शैलेशी अवस्था में केवल निर्जरण होता है। २१४
८. मनुष्य अपने प्रमाद से नानारूप योनियों का संधान करता है। १०५
९. ममत्व की ग्रंथि से बंधा हुआ पुरुष अर्थ का अर्जन करता है। ९५
१०. मोह राग-द्वेषात्मक होता है। ११५
११. आर्त्त मनुष्य भी धर्म को स्वीकार नहीं करते और प्रमत्त-विलासी मनुष्य भी। २१५
१२. क्रूरता सामाजिक सम्बन्धों को समस्या-संकुल बनाकर मनुष्य को अपारंगम बना देती है। ११०
१३. करणीय और अकरणीय का अविवेक मोह है। ११६
१४. काम बाधा उपस्थित करने वाले और विघ्नबहुल होते हैं। ३१३
१५. अव्यक्त मनुष्य अहंकारग्रस्त होकर महान् मोह से मूढ हो जाता है। २६६
१६. कुछ पक्षी उदकचर भी होते हैं। ३०५
१७. संवेग से जीव अनुत्तर धर्म श्रद्धा को प्राप्त होता है। १९६
१८. गौरव के परित्याग से ही धर्म का ज्ञान होता है। ३३५
१९. जातिस्मृति से आत्मा और पुद्गल का संबंध-बोध भी होता है। २५
२०. जो सत्य की आज्ञा में उपस्थित है, वह मेधावी मृत्यु को तर जाता है। १८९

मंथन-XIV

१. आयारचूला (५-२१)। ३२६
२. दसवेआलियं, ६/८। १५
३. आचारांग चूर्णि, पृष्ठ ४४। ८९
४. तैतरीय उपनिषद् २/२। २९२
५. दसवेआलियं, ४/सूत्र १८। १८३
६. गीता ५/७ शांकरभाष्य, पृष्ठ २१७। १५३
७. आचारांग चूर्णि, पृष्ठ २९। ५३
८. दसवेआलियं ६/२०। २५३
९. भामिनीविलास, १/८२ ४३
१०. विशेषावश्यकभाष्य, गाथा ४८४। १९३
११. उत्तरज्झयणाणि, १४/५। २१
१२. उत्तरज्झयणाणि ५/७। २११
१३. नैषधचरितम् ३/२१। ६७
१४. दसवेआलियं ९/४ सूत्र ६। २६२
१५. सुश्रुतसंहिता, शारीरस्थान २/५७ २०

मंथन-XV

१. मुनि २८७
२. नियम ८६
३. मध्यम ९२
४. 'महातप' ५१
५. पवयणस्स भू.१७
६. समता ५
७. ताणाए ९२
८. एकशाटक ४१३
९. कर्मवाद २९८
१०. दण्डसमादानम् १०२
११. महामुनि ३१५
१२. निर्मोह ८१
१३. हरति ४३
१४. तिन्नेव ५०३
१५. वत्थग ४७४
१६. गर्भज ६८
१७. जरा ९१
१८. रागो १७५
१९. गोपन २५७
२०. नमाता १९४

मंथन-XVI

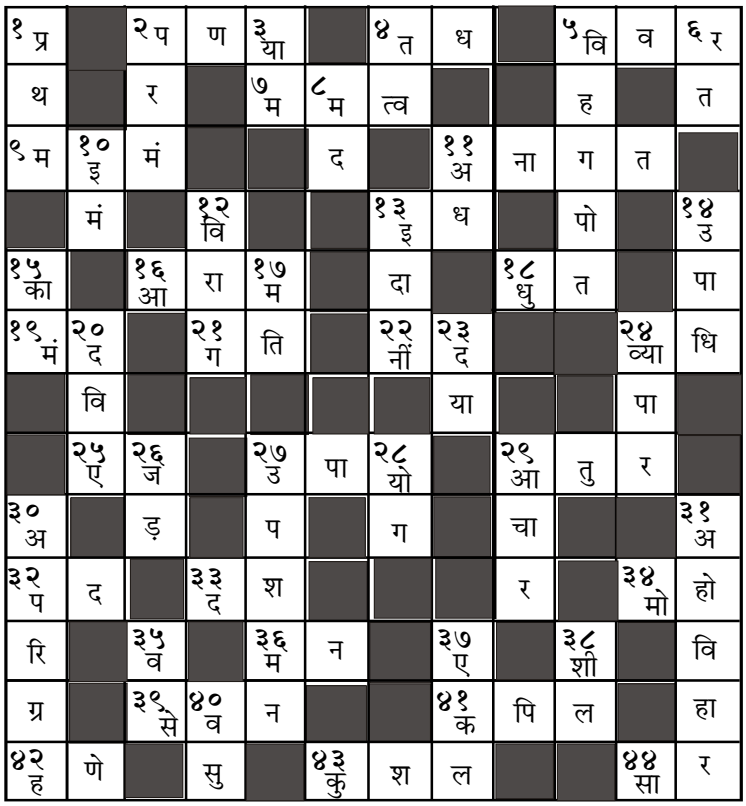

बायें से दायें

२.	पणया	४६
४.	तध	२७१
५.	विवर	१२०
७.	ममत्व	९५
९.	मइमं	१३२
११.	अनागत	१८६
१३.	इध	१७४
१६.	आराम	४१९
१८.	'धुत'	२९७
१९.	मंद	९८
२१.	गति	१८५
२२.	नींद	४२६
२४.	व्याधि	१३६
२५.	एज	७४
२७.	उपायो	२२२
२९.	आतुर	४३८
३२.	पद	२९४
३३.	दश	३०३
३४.	मोहो	२७२
३६.	मन	२८५
३९.	सेवन	२७५
४१.	कपिल	५१
४२.	हणे	१५०
४३.	कुशल	२६७
४४.	सार	२३६

ऊपर से नीचे

१.	प्रथम	२१०
२.	परमं	४०४
३.	याम	३६४
४.	तत्व	१०५
५.	विहग-पोत	३३०
६.	रत	२७०
८.	मद	१२५
१०.	इमं	२६४
११.	अध	२१६
१२.	विराग	भू. ७
१३.	इदानीं	१९६
१४.	उपाधि	२००
१५.	कामं	२४०
१७.	मति	१४१
२०.	दविए	२२७
२३.	दया	३४०
२४.	व्यापार	३१३
२६.	जड़	३०२
२७.	उपशमन	२७०
२८.	योग	४४१
२९.	आचार	८७
३०.	अपरिग्रह	२५६
३१.	अहोविहार	९३
३५.	वसे	८९
३७.	एकल	३१६
३८.	शील	२५९
४०.	वसु	३१२